P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

21वीं सदी में भारत–चीन के प्रतिस्पर्धात्मक संबंधों की समीक्षात्मक अध्ययन

सत्येन्द्र कुमार
शोध–छात्र,
राजनीति विज्ञान विभाग,
बी.आ.ए.बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

सारांश

दक्षिण एशिया एवं हिन्दमहासागर क्षेत्र में उभरती हुई विश्व की दो महत्वपूर्ण शक्तियां भारत एवं चीन अपने प्रभाव को कायम रखने एवं उसे बढ़ाने के लिए प्रतिस्पर्धात्मक रूप से एक दूसरे के साथ आर्थिक एवं राजनीतिक खेल खेल रहे हैं। दोनों देश दक्षिण–एशिया के विभिन्न देशों एवं हिन्दमहासागर के विभिन्न तटवर्ती देशों को अपने आर्थिक एवं सामरिक रणनीति का इस्तेमाल करते हुए अपने पाले में करने का प्रयास कर रहे हैं। इस प्रकार की स्थिति तब उत्पन्न हुई है जब इन क्षेत्रों में चीन का प्रवेश हुआ है। चूँकि भारत–चीन के सम्बन्ध लम्बे समय से तनाव के वातावरण से गुजर रहे है और इस स्थिति में चीन का इन क्षेत्रों में प्रवेश कही–न–कही भारत के प्रभाव को चुनौति देने के उद्देश्य से हुई है जिससे भारत के आर्थिक एवं सामरिक सुरक्षा खतरा में दिखाई पड़ता दिख रहा है। दूसरी तरफ भारत भी चीन के द्वारा उपस्थित की गई चुनौतियों का बखूबी सामना कर रहा है और आपने पड़ोसियों एवं तटवर्ती और अन्य पड़ोसी देशों के साथ अपने सम्बंधों को सुदृढ़ करते हुए अपना प्रभाव बढ़ा रहा है।

मुख्य शब्द : दक्षिण एशिया, हिन्दमहासागर, सामरिक, सुरक्षा, आर्थिक हित, प्रतिस्पर्धा, प्रभाव, चुनौतियाँ, महत्त्वपूर्ण शक्तियाँ।

प्रस्तावना

भारत चीन के बीच संबंधों का इतिहास बहुत पुराना है। भारत का ब्रिटिश चंगुल से आजाद होना और चीन में साम्यवादी सरकार का सत्ता में आना दोनों ही घटनाएँ विश्व राजनीति का महत्वपूर्ण पड़ाव है। दोनों देशों के संबंधों में 'हिन्दी चीनी, भाई–भाई' की नारा ने प्रगाढ़ता अवश्य लायी लेकिन यह क्षणिक ही रहा और 1962 के भारत–चीन युद्ध ने संबंधों पर बर्फ की चादर चढ़ा दी जिसने कई दशकों तक भारत–चीन के बीच सबंध तनावपूर्ण बना रहा। हालांकि बीच–बीच में संबंधों को बहाल करने के प्रयास अवश्य होते रहे लेकिन महत्वपूर्ण सफलता हमें 21वीं सदी के प्रारंभिक वर्षों में देखने को मिला जब कूटनीति, व्यापार एवं सीमा विवाद को सुलझाने के लिए नए मार्गों की तलाश की जाने लगी। वैश्वीकरण के इस दौर में जब विभिन्न देशों के बीच आर्थिक संबंधों में मजबूती आ रही है वही अन्य संबंधों को दोयम दर्जे पर रख दिया गया है। तो ऐसी स्थिति में भारत–चीन के आर्थिक संबंधों में मजबूती आना स्वाभाविक है। वर्ष 2003 में दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय व्यापार जहाँ 3 बिलियन डॉलर का था वही हाल ही में प्रकाशित भारत चीन व्यापार आंकड़ों के अनुसार द्विपक्षीय व्यापार 2018–19 में 88 बिलियन डॉलर तक पहुँच गया।[1] एक तरफ भारत–चीन के मध्य आर्थिक संबंधों में गुणोत्तर वृद्ध हो रही है, वही दूसरी तरफ खासकर दक्षिण एशिया एवं हिन्द महासागर में सामरिक, रणनीतिक एवं सुरक्षा के मोर्चो पर दोनों देशों के प्रतिस्पर्धात्मक संबंध तनावपूर्ण बने हुए हैं।

दक्षिण एशिया के क्षेत्र हिन्दमहासागर में चीन की महत्वकांक्षा दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है और यह महत्वाकांक्षा भारतीय सामरिक एवं रणनीतिक हित के प्रतिकूल है जो चीन के 'मोतियों की माला' रणनीति में स्पष्ट दिखती है। इसके द्वारा चीन हिन्द महासागर में स्थित भारत के पड़ोसी द्वीपों एवं तटवर्ती राज्यों में पहुँच कर भारत को घेरने की नीति से कार्य कर रहा है ताकि भारत महाशक्ति के रूप में न उभरे। कुछ वर्ष पूर्व से श्रीलंका एवं चीन के बीच संबंधों में उल्लेखनीय विकास देखा गया और इस विकास का मुख्य उद्देश्य हिंद महासागर में अपने आर्थिक संबंधों को मजबूत करना तो रहा ही साथ ही सुरक्षा एवं सामरिक क्षेत्र में भारत के प्रभाव को कम कर अपने प्रभाव को बढ़ाना रहा है। चीन ने श्रीलंका के हम्बनटोटा बंदरगाह से हिंद महासागर में अपनी नौ सैनिक गतिविधियों के संचालन की योजना बनाई। उल्लेखनीय है कि हम्बनटोटा

बंदरगाह को विकसित करने के लिए श्रीलंका ने सबसे पहले भारत से ही आग्रह किया था। लेकिन इससे पहले कि भारत तैयार होता, चीन ने श्रीलंका को मदद देने की पेशकश कर डाली और अपनी चाल में कामयाब हो गया। श्रीलंका के हंबनटोटा बंदरगाह का प्रबंधन अब श्रीलंका के प्रत्यक्ष नियंत्रण के अधीन नहीं है। इसका संचालन चीन द्वारा अपने देश की स्वामित्व वाली कंपनी, चीन मर्चेंट पोर्ट्स होल्डिग द्वारा नियंत्रित किया जाता है। बंदरगाह के निर्माण के लिए करीब 16 अरब डालर का निवेश करने वाले बीजिंग ने लाभों का फायदा उठाया, जब कोलंबो ऋण पर पुनर्भुगतान करने में असमर्थ था और इस तरह उसे चीनी मर्चेंट पोर्ट्स होल्डिंग्स को 70 प्रतिशत हिस्सेदारी बेचने के लिए मजबूर कर दिया गया जिसके लिए बंदरगाह को संचालित करने के एक 99 साल के पट्टा पर 31 जुलाई 2017 को औपचारिक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। फिर, सफेद हाथी, मातला का अतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा है जो हम्बनटोटा जिले में स्थित है। जिस पर 209 मिलियन डॉलर की लागत आयी थी।[2] श्रीलंका के पूर्व राष्ट्रपति महिन्द्र राजपक्षा का झुकाव चीन के प्रति रही है जिसके शासन काल में चीन को भारत के खिलाफ हिन्द महासागर में पैर पसारने का मौका मिला लेकिन वर्तमान में नई सरकार आने से स्थिति कहीं–न–कहीं भारत के पक्ष में दिखता है।

भारत का एक पड़ोसी देश मालदीव है जो भारत के लक्ष्यद्वीप से महज 700 किलोमीटर की दूरी पर है। यह देश भारत के लिए सामरिक एवं सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से काफी संवेदनशील है। वर्तमान समय में मालदीव हिंद महासागर भारत और चीन के बीच एक उभरती प्रतिद्वदिता का केन्द्र बन रहा है मालदीव, फारस की खाड़ी, अदन की खाड़ी और मल्लका जलडमरूमध्य जैसे महत्वपूर्ण अतर्राष्ट्रीय समुद्री जलमार्गों के निकट स्थित है जिससे होकर चीन, जापान, दक्षिण कोरिया और भारत जैसे कई देशों को उर्जा की आपूर्ति होती है। भारत का करीब 95 प्रतिशत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार हिन्द महासागर के द्वारा ही होता है। इसलिए यह समझा जा सकता है कि इसके मार्गों को सुरक्षित रखना भारत के लिए भू–आर्थिक दृष्टि से कितना महत्वपूर्ण हैं। चीन ने ऐंटी पायरेसी के नाम पर 10 साल पहले हिंद महासागर में अदन की खाड़ी तक अपने नौसैनिक जहाज भेजने शुरू किए इसकी वजह से मालदीव का महत्व लगातार बढ़ते गया और अब यह अतरराष्ट्रीय भू–राजनीति का केन्द्र बन गया है। चीन हिंद महासागर में अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए मालदीव में वर्ष 1999 में मराओं द्वीप लीज पर ले लिया चीन इसका उपयोग निगरानी अड्डे के रूप में करता है।[3]

भारत के पूर्वोतर क्षेत्र में म्यामार है यह बंगाल की खाड़ी और हिन्द महासागर का तटीय इलाका होने के कारण भारतीय सुरक्षा को काफी प्रभावित करता है। आजकल इस पर चीन की नजर है। इसके लिए चीन म्यांमार के साथ सैन्य व आर्थिक सम्बंधों में वृद्धि कर रहा है। म्यांमार के एक बंदरगाह यांगून पर भी मिलिट्रीवेस बना रहा है। चीन म्यांमार के सिटवे बंदरगाह पर चीन एक तेल एवं गैस पाइपलाइन बिछा रहा है। ज्ञात हो कि सिटवे गैस फिल्ड से चीन तेल व गैस की सप्लाई करेगा। ऐसी स्थिति में भारत के लिए जरूरी है कि वह बंगाल की खाड़ी में भारत की सुरक्षा हितों और जहाज रानी मार्गों की जो भारतीय व्यापार के लिए भी खास महत्व रखते हैं कि सुरक्षा करे और इसके लिए म्यांमार के साथ समीकरणों का निर्माण करना भारत के लिए जरूरी है। चीन की दक्षिण पूर्वी एशियाई नीतियाँ भी आसियान के प्रति और खासतौर पर म्यामार को लेकर भारत की नीतियों को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक रहे हैं। चीन और बंग्लादेश के मध्य बढ़ते हुए संबंध भी भारत के लिए चिंता का विषय है। चटगाँव बंदरगाह से बंगलादेश का 90 प्रतिशत व्यापार होता है। इस बंदरगाह के विकास के लिए भी चीन 8.7 विलियन डॉलर की मदद कर रहा है। बंग्लादेश का कहना है कि बीजिंग के साथ उसका संबंध आपसी समझ राजनीतिक व आर्थिक हितों पर आधारित है। लेकिन सिल्लीगुड़ी गलियारे को लेकर भारत की चिंता सामाने आती है जिसमें सड़क व वायुमार्ग भी शामिल है। सिलीगुड़ी गलियार, चीन व बंग्लादेश की मित्रता में एक महत्वपूर्ण तथ्य माना जा सकता है जो पूर्वोतर भारत को संकट में ला सकता है। इससे चीन को बंग्लादेश से सम्पर्क करने से मदद मिलेगी। चीन भारत को प्रभावित करने के लिए नेपाल के साथ मेलजोल बढ़ा रहा है। चीन–नेपाल को अपने पाले में करने के लिए उसके साथ रेल, सड़क एवं बंदरगाह सम्पर्क सुविधा का विस्तार कर रहा है और भारत पर से नेपाल की निर्भरता को कम करने का प्रयास कर रहा है। चीन ने नेपाल के साथ ऍजिट और ट्रॉसपोर्ट समझौता किया है जिसके तहत चीन नेपाल को अपने बंदरगाह उपलब्ध कराएगा साथ ही दोनों देशों के बीच रेल सम्पर्क का विकास करेगा जिसके लिए चीन नेपाल में भारी निवेश का इच्छुक है और कर भी रहा है। लेकिन नेपाल इस बात से सशंक्ति है या नेपाल को डर है कि ताजकिस्तान, लाओस, मालद्वीप, जिबूती, कीर्गिस्तान, पाकिस्तान, मंगोलिया, श्रीलंका मोटेनेग्रा की तरह वो भी कर्ज के बोझ तले दब न जाए। भारत और पाकिस्तान के सम्बंध काफी संवेदनशील रहा है। दोनों देशों के बीच हमेशा तनाव बना रहा है। जिसका भरपुर फायदा चीन ने उठाया है। भारत का भय दिखाकर चीन पाकिस्तान में व्यापक पैमाने पर निवेश कर रहा है। जिसमें ग्वादर बदरगाह का निर्माण मुख्य है। यहां चीन ने मिलिट्री वेश बनाया है जिसका इस्तेमाल विपरीत परिस्थितियों में भारत के खिलाफ किया जा सके। हाल के वर्षों तक आतंकी मसूद अजहर वैश्विक आतंकी घोषित न हो इसके लिए चीन पाकिस्तान को सुरक्षा परिषद् में भरपूर सहयोग किया। चीन अफ्रीकी देश जिबूती में अपना पहला विदेशी नौ सैनिक वेश स्थापित करने के लिए अपना युद्धपोत जुलाई 2017 भेजा। केवल 8 लाख की जनसंख्या वाला जिबूती अरब सागर के किनारे स्थित है। इस जगह पर नौसैनिक अड्डा बनाने के बाद चीन की स्थिति अरब सागर में मजबूत हो गयी है। इस तरह चीन भारत के विभिन्न तटीय देशों के साथ अपने संबंधों में तीव्र गति से सुधार कर रहा है।

भारत अपने आर्थिक, रणनीतिक एवं सामरिक सुरक्षा को मजबूत करने के लिए अपने विदेशनीति को धारदार बनाने का प्रयास कर रहा है। विश्व परिदृश्य

गतिमान है ऐसी स्थिति में एक तरफ भारत अपने पड़ोसी देश चीन के साथ संबंधों को गढ़ रहा है। वही दूसरी तरफ दक्षिण एशिया एवं हिंद महासागर में चीन से चुनौतियाँ मिल रही है जिसमें चीन द्वारा अपनायी गयी रणनीति 'स्ट्रींग ऑफ पर्ल्स' भारत के सामरिक और आर्थिक सुरक्षा को काफी प्रभावित कर रहा है। ऐसी स्थिति में भारत अपने सामरिक एवं आर्थिक सुरक्षा को बढ़ाने एवं अपने प्रभाव को कायम रखने के लिए 'स्ट्रींग ऑफ पर्ल्स' का उत्तर 'स्ट्रींग ऑफ डायमंड' या 'स्ट्रींग ऑफ फ्लावर' की रणनीति के तहत दे रहा है। स्ट्रींग ऑफ फ्लावर का अर्थ–जिस तरह से चीन भारत के चारों तरफ मिलिट्री वेश बना रहा है उसको विफल करने के लिए भारत भी अपने नेवी को अधिक से अधिक मजबूत कर रहा है। साथ ही चीन जिस–जिस देश से संबंध बढ़ा रहा है, भारत भी उस– उस देश से अपना संबंध सुदृढ़ कर रहा है। इन देशों में भारत कुछ–कुछ जगहों पर अपना मिलिट्री वेश स्थापित करने में सफल रहा है। इसके अलावा चीन, भारत के अन्य बचे पड़ोसी देश में अपना मिलिट्री वेश स्थापित करना चाहता है। भारत के मजबूत कूटनीतिक के चलते इस रणनीति में काफी हद तक तेजी आई है। खबरों के अनुसार भारत सेशेल्स और मारिशस के द्वीपों क्रमशः 'अजंप्शन' और 'अगालेगा' नौसैनिक वेश स्थापित कर लिया है। यह भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 'स्ट्रींग ऑफ फ्लावर्स' रणनीति का हिस्सा है।[4]

भारत अपने रणनीतिक उद्देश्यों के तहत हाल के वर्षों में भारत–ईरान के बीच चाबहार बंदरगाह समझौते से भारत, ईरान, अफगानिस्तान, मध्य एश्या, रूस और यूरोप तक अपने व्यापारिक सामानों की पहुंच विकसित कर लेगा। भारत अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए अफगानिस्तान में आधारभूत संरचनाओं के तहत सड़क, रेल, डैम, संसद, भवन, एवं विश्वविद्यालय आदि का निर्माण किया है। इस कारण अफगानिस्तान भारत के समर्थन में सीपैक को ब्लॉक कर रखा है। भारत के पड़ोसी देश ओमान के साथ भारत का मिलिट्री डील 2006 में ही हो चुका है जिसके तहत ओमान भारतीय नेवी को अपने पोर्ट में प्रवेश का अनुमति देता है। ओमान अपना दुक्कम पोर्ट भारत में मिलिट्री इस्तेमाल के लिए दे रखा है।[5] जिस तरह जिबूति ने चीन को अपना मिलिट्री वेश बनाने के अनुमति दी जो जुलाई, 2017 में बन कर तैयार हुआ, ठीक उसी तरह भारत को अनुमति मिल सकता है। इसके लिए भारत से बातचीत चल रही है। भारत और मालदीव के बीच मतभेद तब उत्पन्न हो गया था जब गयुम सरकार ने भारत की कंपनी जीएमआर से 511 अरब डालर की लागत से बनने वाले अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे की डील को रद्द कर दिया था।[6] वहीं दूसरी तरफ मालदीव भारत को अपने दो द्वीप पर रडार स्टेशन और लिस्निंग पोर्ट बनाने का भी मौका दिया है जिसके तहत भारत यहां पर कोस्टल रडार लगा चुका है और ये रडार समुद्री सीमा की सुरक्षा करने में सहयोग देता है साथ ही समुद्रों में उड़ने या गुजरने वाले जहाजों पर भी नजर रखता है। दक्षिणी अफ्रीकी देश मारिशस को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत जितना मदद करता है, उतना ही मारिशस भारत को मदद करता है। भारत और मारिशस के बीच रक्षा सहयोग के तहत भारतीय नेवी हर साल दो से तीन बार मारिशस के विजिट पर जाता है। मारिशस में भारत का एक कोस्टल सर्विलांस रडार भी है जो पायरेसी को नियंत्रित करता है।[7] मेडागास्कर ने भी भारतीय नेवी हर साल विजिट को जाती है। हाल के वर्षों में उपरोक्त अफ्रीकी देशों से भारत के संबंधों में मजबूती अवश्य आयी है लेकिन ये देश चीन को भी उतना ही तरजीह दे रहे हैं क्योंकि ये देश धीरे–धीरे चीन के आर्थिक प्रभाव में आ रहे हैं, जो भारत के लिए कहीं–न–कहीं खतरे की घंटी है।

भारत– म्यांमार और थाईलैंड के बीच एक समझौता हुआ, जिसे भारत– म्यांमार, थाइलैंड कॉरीडोर के नाम से जाना जाता है। इस कॉरीडोर का उपयोग भारत–म्यांमार–थाइलैंड के बीच व्यापार को सुदृढ़ करना और विभिन्न आर्थिक प्रोजेक्ट का विकास करना है। इसके अलावा एक समुद्री मार्ग का भी विकास किया जा रहा है, जिसमें कोलकाता पोर्ट को म्यांमार के सितवे पोर्ट से जोड़ा जाएगा। साथ ही सितवे पोर्ट से म्यांमार के अंदरूनी हिस्से तक भारत रोडवेज, रिवरवेज व रेलमार्ग भी बना पायेगा।[8]

भारत चीन के रणनीतियों को प्रभावहीन बनाने के लिए विभिन्न देशों के समूहों के साथ भी समझौता किया है। ये समझौते कहीं न कहीं चीन के आक्रामक नीतियों पर अंकुश लगाया है। चीन की आक्रामक नीतियों पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से क्यूयूएडी (क्वाड) की स्थापना की गई। क्वाड के अंतर्गत जापान, भारत, अमेरिका और आस्ट्रेलिया शामिल हैं। इन चारों के बीच एक ऐसा समझौता भी है कि किसी भी एक देश पर कोई हमला करता है, तो उस देश पर चारों मिल कर हमला कर सकते हैं। इसके अलावा जापान के साथ भारत समय–समय पर मिलिट्री सहयोग करता है। भारत, अमेरिका और जापान 2007 से मालाबार युद्धाभ्यास कर रहे हैं। यह दुनिया का महत्वपूर्ण नेवी युद्धाभ्यास है। अमेरिका, चीन के प्रभाव को कम करने के लिए भारत को युद्ध सामग्री का सप्लाई कर रहा है खासकर एंटी सबमरीन बार फेयर के लिए जैसे– पीएटआई और हाल ही में खरीदा जानेवाले एमएससिक्टीआर रोमियो हेलिकॉप्टर। ये दोनों हेलिकॉप्टर चीनी सबमरीन ढूँढ़ने में सक्षम है। हीरों की माला के तहत भारत, वियतनाम और डंडोनिशिया के साथ समझौता कर चुका है। वियतनाम एक ऐसा देश है जो हर साल भारतीय नेवी के जहाज को बुलाता है। साथ ही वियतनाम में भारत को एक वेश भी मिल रहा है, जिसका इस्तेमाल दक्षिण चीन सागर में चीन के दबदबा को कम कर सकेगा। इंडोनेशिया में भी भारत को एक वेश मिल रहा है। इसके अलावा भारत भू–सीमा के तरफ से भी भूटान और नेपाल में एयरवेश बना चुका है और वहीं मध्य एशिया के ताजिकिस्तान में भारतीय एयरफोर्स का सबसे पहला ओवरसीज वेश है जिसके मदद से भारत, चीन का काउंटर कर सकता है।[9] एशिया–अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर (एएजीसी) एशिया और अफ्रीका की अर्थव्यवस्थाओं को संस्थागत, बुनियादी ढांचे, कनेक्टिविटी उपायों और लोगों के बीच केन्द्रित दृष्टिकोण के साथ क्षमता निर्माण का विकास कर एकीकृत करने के

लिए भारत और जापान की संयुक्त पहल है।[10] आईओआरए (इंडियन ओसन रिम एसोसिएशन) नवीकरणीय ऊर्जा और ब्लू अर्थव्यवस्था में समुद्री सुरक्षा, बचाव, जल विज्ञान, व्यापक संस्थागत, थिंकटैंक एवं नेटवर्किंग तक भारत आईआरएस की गतिविधियाँ विस्तृत करने और सुदृढ़ करने की योजना बना रहा है। इसमें हिंद महासागर के 21 तटवर्ती देश शामिल हैं।[11]

भारत, चीन को नियंत्रित करने के लिए अंडमान और निकोबार को अपना ट्राई कमांड बना चुका है। अंडमान और निकोबार स्ट्रेट ऑफ मल्लका के काफी समीप है। आवश्यकता पड़ने पर भारत मल्लका स्ट्रेट की नाकेबंदी कर सकता है। भारत अमेरिका के साथ लॉजिस्टिक एक्सचेंज मेमोरेंडम ऑफ एग्रीमेंट (लिमुआ) समझौता किया है, जिसके तहत भारत अपने जहाजों को रिपेयर, रिफ्यूल एवं रिआर्म करने के लिए अमेरिकी वेश का उपयोग कर सकता है। साथ ही साथ अमेरिका भी ये सुविधा प्राप्त कर सकता है। एक समझौता के अनुसार अमेरिका चीन के हर गतिविधि की जानकारी भारत को देगा।[12] प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सरकार आने से भारत के विदेश नीति चीन के प्रति सहयोगात्मक तो अवश्य रहे है लेकिन कभी–कभी तनाव की स्थिति भी देखी गई है। डोकलाम एवं चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा आदि के मुद्दे पर भारत के रक्षात्मक एवं आक्रमक रूख ने चीन को कहीं–न–कहीं सोचने पर विवश किया है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस आलेख का उद्देश्य 21वीं शताब्दी में दक्षिण एशिया एवं हिन्द महासागर में भारत के सामरिक सुरक्षा पर पड़ रहे प्रभावों एवं उन प्रभावों से भारत अपने आप को किस प्रकार सुरक्षित कर रहा है इसका समीक्षात्मक अध्ययन किया जाना है।

निष्कर्ष

उपरोक्त समीक्षा से स्पष्ट है कि भारत–चीन संबंध काफी संवेदनशील दौड़ से गुजर रहा है जिसमें एक तरफ हम देखते हैं कि अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर दोनों देशों के मध्य सहयोगात्मक संबंध सुदृढ़ हो रहे है वही दूसरी तरफ हम देखते हैं कि सामरिक, रणनीतिक एवं सुरक्षात्मक मोर्चे पर घोर प्रतिस्पर्धा दिखाई दे रहा है। दक्षिण एशिया एवं हिंद महासागर में दोनों देशों द्वारा जो भी नीतियाँ अपनायी गयी है उन नीतियों के प्रति इन क्षेत्रों के देश असमंजस की स्थिति में रहते हैं कि हमारी राष्ट्रीय हित, सुरक्षात्मक हित और आर्थिक हित इन दो महाशक्तियों में से कौन–सी महाशक्ति पूरा कर सकती है। जब इन क्षेत्र के देशों में राजनीतिक सत्ता परिवर्तन होता है तो इनके विदेश नीतियों में भी परिवर्तन हो जाता है जो कभी चीन के पक्ष में होता है तो कभी भारत के पक्ष में। जिसका प्रभाव भारत–चीन संबंधों पर पड़ता है। विभिन्न देशों को अपने पक्ष में करने के लिए इन क्षेत्रों में चीन के द्वारा 'मोतियों की माला' नीति के तहत भारत को घेरने और भारत द्वारा 'हीरों की माला' या 'फूलों की माला' नीति के तहत चीन के नीतियों की काट ढूँढ़ने में लगा हुआ है जो 21 वीं सदी में भारत चीन संबंधें की एक विशेषता बन गयी है।

अंत टिप्पणी

1. *Dr. Jayanti Lal Bhandar, www.prabhatkhabar.com, 25 April 2009.*
2. *http://M.jagranjosh.com/generalknowledge/howchinastraingof pearls project-would-affect-security in hindi 1500888770-2*
3. *डॉ. सलीम अहमद, ''मोदी सरकार के युग में भारत श्रीलंका संबंधः चीन से चुनोतियाँ'' वर्ल्ड फोकस, अप्रैल, 2018, पृ. 91*
4. *प्रो0 धर्मवीर धनदा, ''भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा के विशेष संदर्भ में ड्रैगन की रणनीतिक तैयारी'', इंडियन जनरल ऑफ अप्लाईड रिसर्च, भो– 4/इसू–3/ मार्च–2014/आई.एस.एस.एन.–2249–555ग*
5. *डॉ0 विजेन्द्र सिंह, ''हिंदमहासागर में भारत चीन शक्ति प्रतिस्पर्धा (मालदीव के विशेष संदर्भ में), रिसर्च रिव्यू इंटरनेशनल जनरल ऑफ मल्टीडिसिपिलीनरी भो.–03, इसू–2, नवम्बर, 2018*
6. *रजनीश कुमार मालदीव से भारत के उखरते पैर कितने नुकसान देह, www.bbc.com, 10 June, 2018*
7. *http://youtube.be/ feygftuueA0*
8. *उपरोक्त*
9. *उपरोक्त*
10. *उपरोक्त*
11. *वर्ल्ड फोकस, मार्च, 2018*
12. *उपरोक्त*